بسم الله الرحمن الرحيم

हज के पाँच दिन

मिलने का पता:

ग़ज़ाला अख्तर शम्सी

जामिया अहसनुल बनात मुरादाबाद

9897029871/7895788682

हज के तमाम अरकान पाँच दिनों में मुकम्मल हो जाते हैं हर दिन का काम अलग अलग होता है। इसलिये पाँचों दिन में क्या क्या करना है हर एक की तफसील अलग अलग सुर्खियों से ज़िक्र कर देते हैं ताकि तमाम काम आसानी के साथ पुरे हो जायें।

हज का पहला दिन (आठवीं ज़िलहिज्जा)

आज हज का पहला दिन है। लिहाज़ा तमाम ज़रूरियात से फारिग़ हो कर गुस्ल करे और एहराम का कपड़ा पहन कर मस्जिदे हराम पहुँच जाये और एक नफली तवाफ करके तवाफ की दो रकअत नमाज़ पढ़े। फिर एहराम के लिए दो रकअत पढ़ें और इन दोनों नमाज़ों में पहली रकअत में **قُلْ يَاَيُّهَاالْكَافِرُوْنَ** *और दूसरी रकअत में.* **قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ** *पढ़ें। एहराम की दो रकअत पढ़ कर यह दुआ करे।*

"ऐ अल्लाह! मैं आपकी खुश्नूदी के लिए हज का ईरादा करता हूँ। उसको मेरे लिए आसान फरमा दे और मेरी तरफ से कुबूल फरमा।"

अगर याद हो तो यह दुआ पढ़े।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اُرِيْدُالْحَجَّ فَيَسِّرْهُ لِىْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّىْ. (هدايه ١/٢١٦، زيلعى ٢/٨)

"ऐ अल्लाह! बेशक मैं हज का ईरादा करता हूँ उसको मेरे लिए आसान फरमा और मेरी तरफ से कुबूल फरमा।"

इसके बाद मर्द बुलंद आवाज़ में और औरत आहिस्ता से तलबिया पढ़े, अब एहराम मुकम्मल हो गया। तलबिया के अल्फाज़ इसी किताब के शुरू में है। वहाँ से देख लें। औरत अगर नापाकी की हालत में हो तो वह मस्जिदे हराम ना आये बल्कि इसी हालत में अपनी क़्यामगाह में एहराम बाँध ले। और दुआ और तलबिया भी पढ़ ले, ऐसी हालत में दुआ और तलबिया मना नहीं है।

मिना की रवांगी

एहराम बाँधने के बाद मिना को रवाना हो जायें और मिना में आठवें ज़िलहिज्जा को जुहर, अस्र, मग़्रिब, ईशा और नवीं ज़िलहिज्जा की फज्र, कुल पाँच नमाज़ें पढ़नी है। मिना को जाने से पहले मुअल्लिम की बस का नम्बर और फिर मिना में आप का खेमा कहाँ है, पहचान कर लें और अपना पहचान कार्ड (Identity Card) हर वक़्त साथ रखें।

अगर आप यह चाहते हैं कि दसवीं ज़िलहिज्जा में सफा मर्वा की सई करने में, ज़्यादा भीड़ होती है; इसलिये पहले ही आठवीं ज़िलहिज्जा को सई भी कर लें तो इसकी भी इजाज़त है और ऐसी सूरत में एहराम के बाद एक नफल तवाफ करें और इस तवाफ में मर्द एहराम की चादर दायें बग़ल से ला कर बायें मूंढे पर डाल रखें। और शुरू के तीन चक्करों में बाजू और मूंढ़े हिलाते हुये तेज़ चला करें। फिर तवाफ की नमाज़ पढ़ कर सफा मर्वा की सई करें मगर सिर न मुँडायें। इसके बाद मिना को रवाना हो जायें फिर यौमुल नहर में सिर्फ तवाफे ज़्यारत करना काफी होगा, सई करने की ज़रूरत नहीं।

हज का दूसरा दिन (नवीं ज़िलहिज्जा)

आज फज्र की नमाज़ के बाद मर्द बुलंद आवाज़ से और औरत आहिस्ता आहिस्ता से तकबीरे तश्रीक़ पढ़े और ये अमल नवीं ज़िलहिज्जा की फज्र से तेरहवीं ज़िलहिज्जा की अस्र तक हर फर्ज़ नमाज़ के बाद एक बार पढ़ना है। तकबीरे तश्रीक़ यह है:

اَكْبَرُ لاَ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ.

फिर सूरज निकलने के बाद अरफात के लिए रवाना हो जाये और रवाना होते वक़्त अगर पढ़ सके तो यह दुआ पढ़ लें।

اَللّٰھُمَّ اِلَیْکَ تَوَجَّھْتُ وَعَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ وَوَجْھَکَ اَرَدْتُ فَاجْعَلْ ذَنْبِیْ مَغْفُوْرًا وَّحَجِّیْ مَبْرُوْرًا وَّارْحَمْنِیْ وَلَا تُخَیِّبْنِیْ وَبَارِکْ لِیْ فِیْ سَفَرِیْ وَاقْضِ بِعَرَفَاتٍ حَاجَتِیْ اِنَّکَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ. (زیلعی ۲/۳۲)

" ऐ अल्लाह! मैं तेरी तरफ मुतवज्जो होता हूँ और तुझ पर भरोसा करता हूँ। तेरी ज़ात का ईरादा रखता हूँ लिहाज़ा मेरे गुनाह मुआफ फरमा और मेरे हज को कुबूल फरमा और मुझ पर रहम फरमा और मुझे नामुराद न बना। और मेरे सफर में बरकत अता फरमा। और मैदाने अरफात में मेरी हाजत पूरी फरमा। बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है।

फिर रास्ते में कसरत के साथ तलबिया पढ़ते रहें और तकबीर यानि **اَللّٰہُ اَکْبَرُ،** *तहलील यानि* **لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ،** *तस्बीह यानी* **سُبْحَانَ اللّٰہِ** *और अल्लाह की हम्दो सना और दरूदो सलाम पढ़ते हुये मैदाने अरफात पहुँच जाये। ज़िक्रो अज़कार के अलावा दूसरी बातों में वक़्त बर्बाद न करे। और अरफात में एक छोटी सी पहाड़ी है उसका नाम जबले रहमत है। मैदाने अरफात के क़रीब पहुँच जाये और जबले रहमत पर नज़र पड़ते ही यह दुआ पढ़े:*

اَللّٰھُمَّ اِلَیْکَ تَوَجَّھْتُ وَعَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ وَجْھَکَ اَرَدْتُ اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ وَتُبْ عَلَیَّ وَاعْطِنِیْ سُؤْلِیْ وَوَجِّهْ لِیَ الْخَیْرَ اَیْنَمَا تَوَجَّھْتُ سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ.

" ऐ अल्लाह! मैं तेरी तरफ मुतवज्जो होता हूँ और तुझ ही पर भरोसा करता हूँ और तेरी ज़ात का ईरादा करता हूँ, ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह मुआफ फरमा और तौबा कुबूल फरमा और मेरी तलब और मेरी मुराद मुझे अता फरमा। हर क़िस्म की ख़ैर को मेरे लिए इस तरफ मुतवज्जो फरमा दे जिधर मैं मुतवज्जो होता हूँ। अल्लाह की ज़ात पाक है, हर तारीफ अल्लाह के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई ईबादत के लायक़ नहीं और अल्लाह बहुत बड़ा है। "

अरफात की सबसे अफज़ल दुआ

अरफात की सबसे अफज़ल और बेहतर दुआ दुआये तौहीद है। हुज़ूर स०अ०व ने इर्शाद फरमाया कि मैंने और मुझसे पहले नबियों ने मैदाने अरफात में

जो दुआयें की हैं उनमें से सबसे अफ़ज़ल दुआ दुआये तौहीद है और दुआये तौहीद के अल्फाज़ यह हैं:

لاَاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لاَ شَرِيْکَ لَهٗ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ. (حصن حصين ١٨٤، ترمذی ١٩٩/٢، زيلعی ٢٥/٢)

“ अल्लाह के सिवा कोई ईबादत के लायक़ नहीं वह तंहा है उसका कोई शरीक नहीं। उसके लिए मुल्क है और उसके लिए तमाम तारीफें हैं, उसी के हाथ में तमाम भलाई है, वह हर चीज़ पर क़ादिर है। ”

इस दुआ को पढ़ कर अल्लाह से जो भी मुरादें माँगी जायें इंशाअल्लाह कुबूल हो जायेंगी। और मैदाने अरफात में ज़िक्र और दुआओं के दर्मियान तलबिया भी पढ़ते रहें। अगर मुम्किन हो तो नीचे लिखी दुआ अरफात में 100 *बार पढ़ें।*

कसरत के साथ पढ़ने की दुआ

मैदाने अरफात में दुआयें बहुत कसरत से करनी चाहिये क्युँकि अरफात की दुआ बहुत मक़्बूल और अफज़ल होतीं है। और मैदाने अरफात में हुजूर स०अ०व का नीचे लिखी दुआ कसरत के साथ पढ़ना साबित है:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِیْ قَلْبِیْ نُوْرًا وَّفِیْ سَمْعِیْ نُوْرًا وَّفِیْ بَصَرِیْ نُوْرًا، اَللّٰهُمَّ اشْرَحْ فِیْ صَدْرِیْ وَيَسِّرْ لِیْ اَمْرِیْ وَاَعُوْذُ بِکَ مِنْ وَسَاوِسِ الصَّدْرِ وَشَتَاتِ الْاَمْرِ وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ مَا يَلِجُ فِیْ اللَّيْلِ وَشَرِّ مَا يَلِجُ فِی النَّهَارِ وَشَرِّ مَا تَهُبُّ بِهِ الرِّيْحُ وَشَرِّ بَوَائِقِ الدَّهْرِ. (غنية الناسك ٨٣، حصن حصين ١٨٣)

ऐ अल्लाह! मेरे दिल को नूर से भर दे और मेरे कानों को नूर से भर दे और मेरी आँखों को नूर से भर दे, ऐ अल्लाह! मेरा सीना खोल दे और दुनया वा आख़िरत में मेरे हर काम को आसान फरमा दे। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से दिल के वसवसे से पनाह माँगता हूँ और काम की परागंदगी और परेशानी से पनाह माँगता हूँ और क़ब्र के फितने और आज़माईश से पनाह माँगता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं तेरे

दरबार में हर उस चीज़ के शर से पनाह चाहता हूँ जिसको हवा अपने साथ ले आती है। और ज़माने की हलाकत के शर से पनाह चाहता हूँ।

अरफात में ज़ोहर व अस्र की नामज़

अरफात में ज़ोहर व अस्र दोनों नमाज़ों को ज़ोहर के वक़्त में एक साथ पढ़ा जाता है। और अरफात में ईमामे हज मस्जिदे नमरा में नमाज़ पढ़ाता है अगर उस ईमाम की इक़तदा में नमाज़ पढ़ते हैं तो दोनों नमाज़ों को ईमाम के साथ ज़ोहर के वक़्त में पढ़ लें। अब अगर आप मक्कतुल मुकर्रमा में नवीं ज़िलहिज्जा से पन्द्रह दिन पहले पहुँच गये थे तो ईमाम जब ज़ोहर की नमाज़ में दो रकअत पर सलाम फेर देगा आप फौरन खड़े हो कर बक़िया दो रकअत पढ़ कर सलाम फेर दें। और ईमाम के साथ अस्र की नमाज़ में शरीक हो जायें। फिर इमाम के सलाम के बाद फौरन बक़िया दो रकअत पढ़ कर सलाम फेर दें। और अगर आप नवीं ज़िलहिज्जा से पन्द्रह दिन पहले मक्का पहुँचे हैं तो ईमाम के साथ साथ सलाम फेर दें। ये ईमाम सूबा नजद से आता है इसलिये उसकी इक़तदा जायज़ है।

एहले ख़ेमा की नमाज़

अगर आप ईमाम के साथ नमाज़ ना पढ़ सकें बलकि अपने ख़ेमे और क़्यामगाह में तंहा या जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ते हैं तो दोनों नमाज़ों को अलग अलग अपने अपने वक़्त पर पढ़ें। दोनों को एक साथ जमा कर के ना पढ़ें।

इन दोनों नमाज़ों के बाद नफल पढ़ना मकरूह है। बलकि नमाज़ से फारिग़ होने के बाद फौरन ज़िक्र, तिलावत और दुआ वगैरह में मशग़ूल होने के लिए ठहर जायें और ठहरने के शुरू में यह दुआ पढ़ें:

لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ اِنَّ الْخَیْرَ خَیْرُ الْآخِرَةِ. اَللّٰھُمَّ لاَ عَیْشَ اِلَّا عَیْشُ الْاٰ خِرَةِ. اَللّٰھُمَّ اھْدِنِیْ

بِالْھُدٰی وَنَقِّنِیْ بِالتَّقْوٰی وَاغْفِرْلِیْ فِی الْآخِرَةِ وَالْاُوْلیٰ. (غنیه ۸۳، حصن حصین ۱۸٤)

"ऐ अल्लाह! मैं तेरे दरबार में हाज़िर होता हूँ, बेशक असली भलाई आख़िरत की भलाई से और ज़िन्दगी नहीं है मगर आख़िरत की ज़िन्दगी वही असली ज़िन्दगी है, ऐ अल्लाह! तू मुझे हिदायत अता फरमा और तक़वे के साथ मुझे पाक व साफ फरमा और दुनया और आख़िरत में मेरी मग़फिरत फरमा।"

इसके बाद खूब गिड़गिड़ाते हुए अल्लाह तआला से मुरादें माँगे। यह सिलसिला

अरफात के वज़ाइफ और दुआयें

لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ، لَا شَرِيْكَ لَكَ.

(जितना ज़्यादा पढ़ सकें)

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

(100 बार पढ़ें)

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ، اَللّٰهُ الصَّمَدُ، لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ *(100 बार पढ़ें)*

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ. *(100 बार पढ़ें)*

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ. *(100 बार पढ़ें)*

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ. *(100 बार पढ़ें)*

لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِيْنَ. *(100 बार पढ़ें)*

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ. *(100 बार पढ़ें)*

فَاللّٰهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ. *(100 बार पढ़ें)*

حَسْبِىَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ. *(100 बार पढ़ें)*

(100 बार पढ़ें) رَبِّ يَسِّرْ وَلَا تُعَسِّرْ وَتَمِّمْ بِالْخَيْرِ وَبِكَ نَسْتَعِيْن.

इसके बाद सू० यासीन, सू० रहमान, सू० मुल्क, सू० तौबा पढ़ें, और हिज़्बुल आज़म की पूरी किताब पढ़ें। फिर क़िबले की तरफ मुँह करें और यह वज़ीफा:

لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَالَّذِىْ تَقُوْلُ وَخَيْرًا مِّمَّا نَقُوْلُ، اَللّٰهُمَ لَكَ صَلَاتِىْ وَنُسُكِىْ وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِىْ وَاِلَيْكَ مَاٰبِىْ وَلَكَ رَبِّ تُرَاثِىْ، اَللّٰهُمَّ اِنِّى اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَوَسْوَسَةِ الصَّدْرِ وَشَتَاتِ الْاَمْرِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّى أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَجِيْءُ بِهِ الرِّيْحُ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَجِيْءُ بِهِ الرِّيْحُ، اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِىْ قَلْبِىْ نُوْرًا وَّفِىْ سَمْعِىْ نُوْرًا وَّفِىْ بَصَرِىْ نُوْرًا، اَللّٰهُمَّ اشْرَحْ لِىْ صَدْرِىْ وَيَسِّرْ لِىْ اَمْرِىْ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَسَاوِسِ فِى الصَّدْرِ وَشَتَاتِ الْاَمْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ.

10 बार पढ़ें (ज़वाल के बाद यानि नमाज़े ज़ोहर के वक़्त)

इस वज़ीफे के पढ़ने के बाद जितनी मुमकिन हो खूब दुआ करें। सबसे पहले सू० फातेहा पढ़ें उसके बाद दरूद शरीफ पढ़ें फिर इस तरह दुआ करें:

या अल्लाह! पूरी पूरी हिदायत और पूरा पूरा ईमान नसीब फरमा, आमीन!

या अल्लाह! जहन्नुम के अज़ाब से पूरी पूरी तरह हिफाज़त फरमा, आमीन!

या अल्लाह! ईमान के साथ दुनया से उठाना, आमीन!

या अल्लाह! जन्नतुल फिरदौस नसीब फरमा, आमीन!

या अल्लाह! तेरी मोहब्बत वाली ज़िन्दगी नसीब फरमा, आमीन।

या अल्लाह! तू हमसे राज़ी हो जा, या अल्लाह! तू हमसे राज़ी हो जा, आमीन।

या अल्लाह! तेरे हुक्मों पर चलने की तौफीक़ अता फरमा,आमीन।

या अल्लाह! नबी करीम स०अ०व के तरीक़े पर चलना हमारे लिए आसान फरमा, आमीन।

या अल्लाह! झूट से हमारी हिफाज़त फरमा, आमीन।

या अल्लाह! ग़ीबत से हमारी हिफाज़त फरमा, आमीन।

या अल्लाह! हसद से हमारी हिफाज़त फरमा, आमीन।

या अल्लाह! इख़लास वाली ज़िन्दगी और अपनी मग़्फिरत नसीब फरमा, आमीन।

या अल्लाह! मौत की सख्ती से हमारी हिफाज़त फरमा, आमीन।

या अल्लाह! क़ब्र की सख़्ती से हमारी हिफाज़त फरमा, आमीन।

या अल्लाह! पुलसिरात पर चलना हमारे लिए आसान फरमा, आमीन।

या अल्लाह! बिना हिसाब के हमें जन्नत में दाख़िल फरमा, आमीन।

या अल्लाह! दुनया व आख़िरत की रुसवाई से हमारी हिफाज़त फरमा, आमीन।

या अल्लाह! हमारे घर वालों और तेरे बन्दों का हक़ अदा करने की तौफीक़ फरमा, आमीन।

या अल्लाह! रोज़ी अता फरमा, आमीन।

या अल्लाह! तेरे बन्दों का मोहताज ना फरमा, आमीन।

या अल्लाह! पूरी पूरी पर्दे की पाबन्दी नसीब फरमा, आमीन।

या अल्लाह! हज्जे मक़बूल नसीब फरमा, आमीन।

या अल्लाह! हुज़ूर स०अ०व की सच्ची पक्की उम्मत बना, आमीन।

या अल्लाह! नफ्स की शरारत से हिफाज़त फरमा, आमीन।

या अल्लाह! छोटी बड़ी बीमारियों से हमारी और पूरी उम्मत की हिफाज़त फरमा, आमीन।

या अल्लाह! क़्यामत के रोज़ हुज़ूरे अकरम स०अ०व के मुबारक हाथों से आबे कौसर पीना नसीब फरमा, आमीन।

या अल्लाह! हुज़ूरे पाक स०अ०व की शिफाअत हमारे लिए कुबूल फरमा, आमीन।

या अल्लाह! एक लुक़्मे के बराबर हमें दुनया के हवाले ना फरमा, आमीन।

या अल्लाह! दज्जाल के फितने से हमारी औलाद की हिफाज़त फरमा, आमीन।

या अल्लाह! दाहिने हाथ में आमाल नामा नसीब फरमा, आमीन।

अब दरूद शरीफ पढ़ें और हमें भी अपनी दुआओं में शरीक रखें।

हमारी ज़िन्दगी उसी ज़ाते पाक के क़ब्ज़ये कुदरत में है जिसने हमें पैदा किया और हर मुसीबत से हमारी हिफाज़त करता है, दुश्मनों से बचाता है अपनी ग़लतियों और गुनाहों की वजह से अगर हम किसी आज़माईश में मुबतला हो जायें तो वही निजात देता है, अल्लाह तआला से ज़्यादा कौन हम पर मेहरबान, हमारा मोहसिन व सरपरस्त हो सकता है, इसलिये ज़िक्र व शुक्र की पाबन्दी हमारी बंदगी का सबूत होना चाहिये।

दुआ इंसानी फित्रत का तक़ाज़ा और इबादत की जान है। अल्लाह तआला की दायमी मग़्फिरत व रज़ामंदी हासिल करने के लिए अपनी बेबसी और लाचारी को हर वक़्त पेशे नज़र रख कर दुआ करते रहें और मज़लूम व मुज़तर की आजिज़ाना दुआओं के कुबूल होने का कोई ना कोई लम्हा ज़रूर आपके हिस्से में आयेगा।

जहाँ तक मुम्किन हो दरूदो इस्तग्फार में मश्गूल रहें और कसरत से तलबिया (लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक) पढ़ते रहें। हर दुआ की इब्तदा और इंतेहा पर दरूद शरीफ कसरत के साथ पढ़ें।

ज़वाल के बाद अपनी क़्यामगाह पर जमाअत के साथ जुहर की नमाज़ अदा करके क़िबला रुख बैठे हुये सौ बारः

لاَاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لاَ شَرِيْکَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ،

फिर सौ बारः **قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ، اَللّٰهُ الصَّمَدُ، لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ.**

फिर सौ बार दरूद शरीफ जो नमाज़ में पढ़ा जाता है, दिल लगा कर पढ़ें।

मुनाजाते अरफात

यह दुआ कुरआने पाक की आयतों और मासूर व मक़्बूल दुआओं का उर्दू तर्जुमा है ताकि हर शख्स समझकर और दिल लगा कर पढ़ें, हर जुबान का पैदा करने वाला आपकी जुबान को जानता है और समझता है। तंहाई और इंकेसारी के

साथ इसको पढ़िये, दिल और आँखें भी दुआ में जुबान का साथ देती रहें:

لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ، لَبَّیْکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ، لَا شَرِیْکَ لَکَ.

(तीन बार)

لَبَّیْکَ رَبِّیْ وَسَعْدَیْکَ، وَالْخَیْرُ کُلُّهٗ بِیَدِکَ، وَاَنَا بِکَ وَمِنْکَ وَاِلَیْکَ، اَسْتَغْفِرُکَ رَبِّیْ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ.

(तीन बार)

ऐ मेरे अल्लाह! तूने हमें दुआ करने का हुक्म दिया है और हमारी दुआओं को कुबूल करने का वादा किया है कि: ‘‘ मुझसे माँगो मैं पूरी करूँगा ’’।

ऐ अल्लाह! हमारी कोताहियों से दरगुज़र फरमा, हमारी बुराईयों की पर्दापोशी फरमा, अपनी रहमत व करम से हमारे तमाम कामों में आसानियाँ पैदा कर।

ऐ अल्लाह! मैं इस मुबारक सफर में और इस मैदाने अरफात में तुझसे तेरी दायमी खुशनूदी और रज़ामंदी के साथ हर क़िस्म की आसानी और सहूलत का तलबगार हूँ, तू ही हमारा रफीक़ और मददगार है, तू ही हमारे बाल बच्चों और घर वालों का मुहाफिज़ व निगहबान है, इस सफर की हर ज़हमत को कुबूल फरमा और हर काम में हमें नेक नियती पर क़ायम रख, मैं इस मैदाने अरफात में सच्चे दिल से इक़रार करता हूँ कि तेरे सिवा मेरा कोई माबूद व मालिक नहीं और हज़रत मोहम्मद स०अ०व तेरे ख़ास बन्दे और बरहक़ रसूल व पैग़म्बर हैं।

ऐ दुनया व आख़िरत के मालिक! ऐ बेपनाह रहम और बख्शिश वाले! मुझ पर तेरी किस क़द्र बेशुमार नेयमतें हैं जिनमें हर नेयमत पर तेरे शुक्र का हक़ अदा नहीं कर सकता, मुझ पर रहमो करम करने वाले, मुझे फुक्रो तंगदस्ती से ज़लील न कर, क़र्ज़ की बदनामी से मुझे बचा और जो नेयमतें तूने मुझे दी हैं उनको मुझसे वापिस न ले, सेहत व आफियत की ज़िन्दगी अता फरमा, अपनी तमाम नेयमतों पर तूझे याद करने तेरा शुक्र और ईबादत का पूरा हक़ अदा करने में मेरी मदद फरमा, हर क़िस्म के शर व फसाद और इस ज़माने के हर फितने से मेरी और तमाम मुसलमानों की हिफाज़त फरमा, तू ही अपने बन्दों पर रहम करने वाला है।

ऐ हमारे अल्लाह! हमारी नमाज़, हमारा हज, हमारी ज़कात, हमारे रोज़े, हमारी तरफ से कुर्बानी, हमारी ज़िन्दगी और मौत सिर्फ तेरे लिए है, मैं तुझसे तेरी

रज़ा, तेरी रहमत, तेरी खुश्नूदी का तलबगार हूँ। यह सब कुछ मेरी आजिज़ाना कोशिश है और तुझ पर मेरा भरोसा है।

ऐ मेरे अल्लाह! मैं इस वक़्त तेरी पाक सरज़मीं और रहमत के ज़ेरे साया हूँ, यह वक़्त तेरी रहमत व मग्फिरत और बख्शिश का है, तौबा करने, गुनाह मुआफ करने और तेरे करम और एहसान की उम्मीद का है। हमारी दुआओं के सुनने और कुबूल करने का यह खास मुक़ाम है। हर शख्स अपनी दुआयें तेरी बारेगाह में पेश कर रहा है और तू ही अपनी रहमत से उनको कुबूल करने वाला है इस मैदाने अरफात में जो आज तेरी तजल्लियात और बरकतों का एक खास दिन और मुक़ाम है, मेरी यह हाज़री उम्र भर में आख़री न हो और बार बार मुझे यहाँ हाज़िरी की सआदत व नेयमत हासिल रहे।

ऐ अल्लाह! हमें हिदायत नसीब फरमा, हमारे ज़ाहिरो बातिन की इस्लाह फरमा, ताकि हम गुमराहियत से दूर रहें और उन मक़्बूल बन्दों में शामिल फरमा जो सच्चे दिल से ईमान लायें हैं। तू पाक और बेऐब है, हम तेरी नेयमतों का शुमार नहीं कर सकते, हम तेरी नेयमतों के शुक्र का हक़ अदा नहीं कर सकते। तू ही सबसे ज़्यादा रहीमो करीम है और हर माँगने वाले को सब कुछ देने वाला है।

ऐ करीम! हमें आफियत व सलामती अता कर, अपनी इताअत व फरमांबरदारी की हिम्मत व तौफीक़ नसीब कर, हमारी यह ज़िन्दगी तेरी अमानत है इसलिये बरहक़ दीने इस्लाम पर ऐसी हालत में हम तेरे सामने हाज़िर हों कि तू हमसे हर तरह खुश और राज़ी हो। तेरे सिवा मेरा कोई मालिक, मेरा कोई पालने वाला और तेरे सिवा कोई ईबादत के लायक़ नहीं। इस कलमे पर मेरी ज़िन्दगी खत्म हो।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ. तीन बार।

तू ही आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला और दुनया व आख़िरत में हमारा मालिक व मददगार है। इस तमन्ना को कुबूल फरमा कि सच्चे मुसलमान की तरह मेरा अंजाम बख़ैर हो। तेरे नेक और मक़्बूल बन्दों की रिफाक़त हासिल रहे, तूने हर चीज़ को अपनी रहमत में ले रखा है, तू हर चीज़ से बाख़ब्र है, तेरी बताई हुई राह पर हमेशा चलने, गुनाहों से बचने और तौबा करने की तौफीक़ अता फरमा।

तूने हमें जितना इल्म दिया है हम उससे ज़्यादा कुछ नहीं जानते, तू ही सब कुछ जानने वाला है मैं तुझसे दीनो दुनया में हर तरह की मुआफी के साथ तरे ग़ज़ब और दोज़ख की आग से पनाह माँगता हूँ।

ऐ अल्लाह! मेरे सुनने, मेरे समझने और देखने की कुव्वत को हमेशा क़ायम रख और मेरे दिल को अपने नूर से भर दे, मुझे मालो दौलत के शर और उसकी बुराईयों से अपनी पनाह में रख, फुक्र और तंगदस्ती की ज़िल्लत और बुरे अंजाम से हमेशा मुझे बचा, दिल की तारीकी, क़ब्र की सख़्ती और अज़ाब से अपनी पनाह में रख, तेरे सिवा कोई बचाने और निजात देने वाला नहीं।

ऐ अल्लाह! मेरी इलतिजा है कि हर वक़्त तेरी याद, तेरी ईबादत, तेरी बन्दगी, हर सूरत से तेरी ताबेदारी का हक़ अदा करूँ। कुरआने पाक की तिलावत को मेरे दिल की बहार, मेरी आँखों का नूर और मेरे रंजो ग़म को दूर करने का ज़रया बना दे।

ऐ अल्लाह! तू अपने किसी बन्दे पर उसकी ताक़त और बर्दाश्त से ज़्यादा भार नहीं डालता, हर एक जो कुछ करेगा उसका नतीजा पायेगा और अपने किये को भुगतेगा, अगर हम भूल चूक से कोई ग़लती कर जायें तो हमारी गिरफ्त न कर, हमें हर क़िस्म के कुफ्र व निफाक़, बाहमी मुख़ालिफत, बदएखलाक़ी, बदनियती से अपने हिफ्ज़ो अमान में रख, दिल में पैदा होने वाले बुरे ख़्यालात, अपने कामों की अबतरी और ज़िन्दगी में हर बला और मुसीबत से तेरी पनाह माँगता हूँ, तू हमें अचानक और बेख़ब्री में हलाक न कर, हमें यकायक अपनी पकड़ और गिरफ्त में न ले, हमको हर हक़ अदा करने, हक़ बात मानने और हक़ बात कहने की तौफीक़ अता फरमा।

ऐ अल्लाह! मैं ऐसे इल्म से जो आख़िरत में काम न आये और ऐसे अमल से जो तेरे यहाँ कुबूल ना हो और ऐसे क़ल्ब से जो तेरी याद से ग़ाफिल रहे और ऐसी नफ्स परस्ती से जिसकी हिर्सो हवस किसी तरह कम ना हो और ऐसी दुआ से जो तेरे यहाँ मंजूर न की जाये, इन सब चीज़ों से मैं तेरी पनाह माँगता हूँ।

ऐ अल्लाह! तू पाक और हर तरह से बेऐब है, हम तेरी इबादत, तेरी

फरमांबरदारी और तेरी नेयमतों के शुक्र का पूरा हक़ अदा ना कर सके तू अपनी मोहब्बत और ईमान को हमारे दिलों की ज़ीनत बना दे, बद आमाली और सरकशी से हमें बचा। दीनो दुनया में अपने घर वालों को हिफाज़त के लिए और जो कुछ तू ने मुझे दिया है उन सबके लिए तेरी रहमत तेरी पर्दा पोशी का तलबगार हूँ। मुझे उस दिन अपने अज़ाब से बचा जिस दिन तू अपने बन्दों को दोबारा ज़िन्दगी दे कर उठायेगा।

ऐ हमारे अल्लाह! तू ही हमारी तमाम ज़रूरतों और कामों को पूरा करने वाला, दुनया व आखिरत में हमारा मर्तबा बुलंद करने वाला, हमारी दर्द भरी आवाज़ को सुनने और हमारी दुआओं को कुबूल करने वाला है। ऐ सब कुछ जानने वाले! हमारे दिलों को पाक कर, हमारे ऐबों की पर्दा पोशी फरमा, हमारे घर वालों और हमारे तमाम मुसलमान भाईयों को हर मुसीबत, हर परेशानी और तमाम आफतों से अपने हिफ्ज़ो अमान में रख, ऐ बेकसों के सुनने वाले हम सब को फैलने वाली बीमारियों, बलाओं, क़हत साली, हर क़िस्म के खुले हुये या पोशीदा गुनाहों, नापसंदीनदा कामों से हम सब की हिफाज़त फरमा।

ऐ अल्लाह! मुसलमान अपनी बदआमाली, सरकशी और गुमराहियों के बदौलत हर जगह बहुत सख़्त मुसीबत और आज़माइश में मुबतला हैं। ऐ परेशान हालों की दुआ को कुबूल करने वाले, हमारे गुनाहों की पादाश्त में हम पर उन लोगों को ग़ालिब और बर सरे इक़्तदार ना कर जो तुझसे नहीं डरते और हम पर रह़म नहीं करते।

ऐ हमारे अल्लाह! जो तेरी राह में सरबकफ हैं, जमकर सब्रो हिम्मत से तेरे दुश्मनों का मुक़ाबला कर रहे हें। तेरा नाम बुलंद करने की कोशिश में लगे हुये हैं, जो दीन की ख़िदमत व मदद कर रहे हैं, जो इस्लाम को दुश्मनों से बचाने की कोशिश में लगे हुये हैं और वह मुसलमान जो तेरे दुश्मनों के मुल्कों में बेकस और बेबस हैं, तेरे दुश्मनों में घिरे हुए हैं, बेयारो मददगार मज़लूमों की तरह अपने मुल्क में रहते हैं, ऐ ज़बरदस्त कुदरत वाले अल्लाह! अपनी रहमत व करम से उन सबकी मदद फरमा, इस्लाम और मुसलमानों को इज्ज़त कुव्वत और बरतरी अता

फरमा, दीन का नाम बुलंद कर और जो तेरे दीन की सच्ची ख़िदमत व मदद करते हैं उनकी ताईद व इमदाद फरमा और जो मुसलमानों को ज़लील करें उनको ज़िल्लत व ख़्वारी में मुबतला कर, ऐ मदद चाहने वालों के ज़बरदस्त मददगार, ऐ मज़लूमों की फरयाद सुनने वाले हमारी हिफाज़त फरमा, हमें नुसरत व कामयाबी अता फरमा।

ऐ हमारे अल्लाह! ऐ इ़ज़्ज़तो अज़मत के मालिक, ऐ हमेशा कुदरत व इख्तयार रखने वाले, ऐ सख्तगीर और ज़बरदस्त कुवत वाले अपने हुक्म व इरादे को फौरन करने वाले, उन काफिरों और मुश्रिकों पर लानत और अपना ग़ज़ब नाज़िल फरमा जो तुझसे हमारा तअल्लुक़ ख़त्म करना चाहते हैं, तेरे चाहने वालों और तेरे उन बन्दों की खूँ रेज़ी करते रहते हैं जो हज़रत मोहम्मद स०अ०व की उम्मत में हैं, तू हमारे दुश्मनों के इस इत्तेफाक़ को ख़त्म कर दे, उनके क़दम उखड़ जायें, इनकी धज्जियाँ उड़ा दे, उनके मुल्कों और आबादियों को तबाह व बर्बाद कर दे, दुश्मनों की हर जमाअत के टुकड़े टुकड़े कर दे, हमारे हर दुश्मन की मदद करने वालों में जुदाई और इख़्तिलाफात पैदा कर दे और ये आपस ही में लड़ते मरते रहें।

ऐ अल्लाह! हज़रत मोहम्मद स०अ०व के तमाम दुश्मनों पर अपना वो ग़ज़ब नाज़िल फरमा जिससे किसी जुल्मो सितम करने वाले को कभी पनाह न मिल सकी वो ज़ालिम जिन्होंने बेगुनाह मुसलमानों की खूनरेज़ी की, उनके मालो दौलत पर क़ब्ज़ा किया, उनकी आबरू और इज्ज़त पर दस्त दराज़ी की, तू ही हमारी जानिब से इन दुश्मनों का मुक़ाबला कर, उनके शर व फसाद से, उनकी साजिशों से, उनके ख़तरनाक ईरादों से हमें अपने हिफ्ज़ो अमान में रख।

ऐ अल्लाह! हमें और हमारी औलाद और तमाम मुतअल्लेक़ीन को उन तमाम चीज़ों और बलाओं से जो हमारे चारों तरफ फैली हुई हैं जिनसे हमारा ईमान कमज़ोर और बसीरत ख़त्म हो गई, हमारे दिल पत्थर बन गये, हया ग़ैरत और शर्म कम हो गई, हम में हर क़िस्म के गुनाह फैल गये, हम हर तरफ से इन गुनाहों में फंसे हुए हैं, हमारा मुल्क, हमारी आबादियाँ तरे नबीये करीम स०अ०व के

दुश्मनों से भरी हुई हैं।

ऐ रहीमो करीम! हमें और तमाम मुसलमानों को इन दुश्मनों की तबाहकारियों से महफ़ूज़ रख, हमारी हिदायत व इस्लाह फरमा, हमारी हालत रोज़ बरोज़ अबतर होती जा रही है, हमें सीधा रास्ता दिखा, हमारी दुआओं के लिए कुबूलियत के दरवाज़े खोल दे, तू ही हर परेशान हाल और बेक़रार की दुआ को कुबूल करता है, ऐ बेपनाह कुदरत व अज़मत वाले परवर्दिगार! हमको दूसरी क़ौमों के लिए लुक़्मये तर न बना, जिस तरह की खाने वाले भूक में दस्तरखान पर लपकते हैं हमको अपनी कसरते तादाद के बावजूद ख़सो ख़ाशाक की तरह सैलाब बहाकर ना ले जाये, हमें वो ईमानी कुव्वत अता कर जिससे हमारे दुश्मनों के दिलों पर हमारी हैबत और रोब क़ायम रहे, हमारे दिलों में कमज़ोरी और ख़ौफ पैदा न हो और हमारे दिलों पर दुनया की मोहब्बत ग़ालिब न आ जाये।

ऐ अल्लाह! रहमतुल लिल आलमीन मोहम्मद स०अ०व के दीन की ताईद और हिफाज़त फरमा, दीन की मदद करने वालों की नुसरत फरमा, जिसने इस्लाम और मुसलमानों की बेख़कनी, तौहीन व बेइज्ज़ती की तू उसे ज़लीलो ख्वार कर दे।

ऐ अल्लाह! तू जब्बारो क़ह्हार अपने ग़ज़ब अपने अज़ाब और हर क़िस्म की बलायें अपने दुश्मनों पर नाज़िल फरमा, उनके दिलों से खौफो दहशत पैदा कर दे, उनकी शक्लो सूरत को बिगाड़ दे, तू ही हमारे दुख दर्द को सुन सकता है, तुझ ही से हम मदद के तबलगार हैं, तेरे सिवा हमारा कोई मोईनो मददगार नहीं।

ऐ अल्लाह! हमारे दिलों की इस्लाह फरमा, हम में बाहमी मोहब्बतो हम्दर्दी पैदा कर दे और आपस के झगड़ों, एक दूसरे की अज़ियत, बुग्ज़ो अदावत से महफ़ूज़ रख, हमें अपने मुसलमान भाईयों के साथ मोहब्बत का तअल्लुक़ और भलाई करने की तौफीक़ अता फरमा।

ऐ अल्लाह! हम तेरी बारगाह और इस मैदाने रहमत में अपने तमाम गुनाहों की मुआफी की उम्मीद ले कर आये हैं, हमें अपनी रहमत से महरूम न रख, तू बड़ा रहीमो करीम है, हमारे हाल पर रहमो करम फरमा, गुनाहों से हमारी हिफाज़त फरमा ताकि हम तेरे अज़ाब से हमेशा महफ़ूज़ रहें, आमीन!!!

لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ، لَبَّیْکَ لا شَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ، لَا شَرِیْکَ لَکَ. (3 बार)

لَبَّیْکَ رَبِّیْ وَسَعْدَیْکَ، وَالْخَیْرُ کُلُّهٗ بِیَدِکَ، وَاَنَا بِکَ وَمِنْکَ وَاِلَیْکَ، اَسْتَغْفِرُکَ رَبِّیْ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ. (3 बार)

अरफात की कुछ और दुआयें

अरफात में निहायत आजज़ी व इंकेसारी के साथ शाम तक दुआ व इस्तग़्फार करते रहें और जो दुआयें भी याद आयें, हिफ्ज़ या देख कर पढ़ते रहें। जबले रहमत के क़रीब जायें और बिलकुल इत्मिनान व सुकूने क़ल्ब के साथ क़िबला रू खड़े हो कर तक्बीरो तहलील, तस्बीह और तलबिया करते हुये हाथ फैला कर खूब दिल से दुआ माँगे, बहुत गिड़गिड़ायें और अपने वालदैन, औलाद, अज़ीज़ों और तमाम मोमिनों और मोमिनात के लिए दुआयें करें और इस वक़्त को ग़नीमत समझें।

उम्र भर की तमन्नाओं के बाद यहाँ तक पहुँचना नसीब हुआ है, यह सआदत और दौलत फिर कभी मुयस्सर आयेगी या नहीं ये सोच कर ज़्यादा से ज़्यादा हुज़्नो मलाल की कैफियत अपने दिल में पैदा करें और रोते हुये दिल और बहती हुई आँखों के साथ दुआयें करें। थोड़ी थोड़ी देर बाद लब्बैक भी कहते रहें। दुआये मुस्तहब पढें, अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा हों, तौबा इस्तग्फार और दरूद शरीफ का कसरत रखें, रोना न आये तो रोने की सूरत ही बना लें और यूँ दुआ करें:

मेरे मालिक! आँसू दे उनमें नहाऊँ, सोज़िश दे तड़पूँ, लोटूँ और आपको पाऊँ, आपसे क्यूँकर माँगूं दिल में क़रार नहीं, तबीअत में यकसूई नहीं और जुबान में गोयाई नहीं, पहले क़रार दे, इत्मेनान अता फरमा, बोलने और माँगने की ताक़त अता फरमा।

मेरे खालिक़! आपके इस नूरे ज़ात के वास्ते से जिससे आसमान और ज़मीन रौशन हैं, और इस हक़ के वास्ते से जो आपको हासिल है और इस हक़ के वास्ते जो माँगने वाले का आप पर है, मैं आपसे माँगता हूँ कि आप मुझे दरगुज़र कर दे और यह कि अपनी कुदरत से मुझे दोज़ख से पनाह दे, आप रहमान हैं, क़ह्हारो जब्बार की तलवार हमारे दुश्मनों के हाथ में ना जाये, खैर की वुसअत दे कर शर से बचाईये। आप करीम हैं, करम की बारिश फरमाइये।

मेरे आक़ा! आप मेरी बात सुन रहे हैं, मेरी जगह देख रहे हैं, मेरे पोशिदा और ज़ाहिर को जानते हैं, मेरी कोई बात आपसे छुपी नहीं है, मैं सख्ती में मुबतला हूँ, मोहताज हूँ, फरयाद और पनाह का तलबगार हूँ, डर रहा हूँ, अपने गुनाहों का इक़रार करता हूँ, आपसे माँगता हूँ, मैं मिस्कीन की तरह आपके सामने गिड़गिड़ाता हूँ, एक ज़लील मुजरिम की तरह आपको पुकारता हूँ जैसा कि एक मुसीबत ज़दा डरने वाला पुकारता है, जिसके आंसू जारी हों और जिसका जिस्म आपके सामने ज़लील पड़ा हो, जिसका नाम ख़ाक आलूद हो अपने फज़लो करम से मेरे सग़ीरा कबीरा गुनाह मुआफ फरमा दीजिये।

ऐ हमेशा से एहसान करने वाले अल्लाह! हमारी गर्दन और हमारे बाप दादाओं की गर्दनों और हमारी माँ बहनों, भाईयों और हमारी औलाद की गर्दनों को दोज़ख की आग से आज़ादी मरहमत फरमा दीजिये।

ऐ अल्लाह! बग़ैर हिसाबो किताब जन्नतुल फिरदौस अता फरमाइये और जहन्नुम के अज़ाब से बचाइये। ऐ अल्लाह! आपके बरगुज़ीदा और मक़्बूल बन्दों ने इस मुक़ाम पर आपसे जो दुआयें की हैं और जिन जिन चीज़ों का आपसे सवाल किया है, ऐ मेरे रहीमो करीम परवर्दिगार मैं भी अपनी ना एहलियत नालायक़ी और सियाहकारी के इक़रार के साथ सिर्फ आपके शाने करम के भरोसे पर इन सब चीज़ों का इस जगह पर आपसे सवाल करता हूँ और जिन चीज़ों से इन्होंने इस मुक़ाम पर आपसे पनाह माँगी है मैं भी उन सब चीज़ों से आपसे पनाह माँगता हूँ।

ऐ अल्लाह! इस ख़ास मुक़ाम के जो खास अनवारो बरकात हैं मुझे उनसे

महरूम न रखें और यहाँ हाज़िर होने वाले अपने अच्छे बन्दों को आपने जो कुछ भी अता फरमाया है या जो कुछ आप उनको अता फरमाने वाले हैं मुझे भी उसमें शरीक फरमा दें।

ऐ अल्लाह! इसी अरफात में हुज़ूर स०अ०व ज़वाल के बाद गूरूबे आफताब तक मुसलसल एक हालत पर खड़े रहे और दुआ, तस्बीहो तहलील, तकबीर में मश्गूल रहें, ऐ अल्लाह इसी अरफात की शाम को जुमे के दिन हुज़ूर स०अ०व को आयते करीमा की खुश्खब्री आपने सुनाई और फरमाया कि आज कामिल कर दिया तुम्हारे दीन को और पूरा कर दिया तुम पर अपनी नेयमतों को और पसंद कर लिया तुम्हारे दीने इस्लाम को।

ऐ अल्लाह! सदक़ा इस अरफात के मैदान का, सदक़ा मश्अरिल हराम के आज की रात का, सदक़ा मदीने की गलयों का और सदक़ा उन पाक ज़र्रों का जो हुज़ूरे अकरम स०अ०व के क़दमों से पामाल हुये, मेरी इल्तिजा को भी सुन लें और कुबूल फरमायें।

ऐ ख़ालिके दो जहाँ! तमाम दुनया से फसाद, खूनरेज़ी, तअस्सुब व तंग नज़री क़हतो बीमारी, काहेली व बेकारी, गिरानी व कमयाबी सब आफतों से जो ज़मीन की हो या आसमान की, मश्रिक़ की हो या मग़रिब की, दीन की हों या दुनया की, वो मुसलमान जो भूके सोते हैं और भूके बेदार होते हैं, वो मुसलमान जो ठुकराये जाते हैं दिन बदिन ज़िल्लत के गड्ढे में गिराये जाते हैं जिन पर रोने वाले भी हँसते हैं, ऐ मुश्किलों के हल करने वाले, अपने हफ्ज़ो अमान में उन सब को याद रखें, आमीन!!!

या सत्तार या ग़फ्फार! उस पत्थर का सदक़ा जो आपकी मोहब्बत में सात दिन के भूके प्यासे के पेट पर बाँधा गया, वास्ता उन छालों का जो बिन्ते रसूल स०अ०व के हाथों में चक्की पसीने से पड़े, वसीला उन प्यासे हलक़ों का जो करबला की तपती ज़मीन पर सितम की छुरी से काटे गये, हरमे हिजाज़ का सद्क़ा, मदीने के दर व दीवार का सदक़ा और न जालियों का सदक़ा जिनके अन्दर आपके हबीब और उनके जानिसार आराम फरमा हैं।

या इलाही! आलमे इस्लाम की तमाम हुकूमतों को बिलखुसूस हमारी सऊदी हुकूमत को हर तरह की ताक़तो कुवत अता फरमाईये और हर तरह की बुराई से बचाइये और सऊदी हुकूमत को मज़ीद खुबियाँ और सआदतें अता फरमाइये जो दिन ब दिन काबा और मदीना मुनव्वरा की आला पैमाने पर तौसी कर रही है जहाँ आज भी दुनया के लोग इत्मिनान के साथ फराइज़े हज अदा कर रहे हैं।

ऐ अल्लाह! तादवाम निज़ामे दुनया उनको और तमामी इस्लामी हुकूमतों को बाइज़्ज़त क़ायम रखें और दुश्मनों और हासिदों से महफूज़ो मामून रखें, आमीन सुम्मा आमीन!!!

मौलाये करीम! हम पूरे दिल के साथ आपको शुक्र अदा करते हैं। अरफात के मैदान में हाज़िरी की सआदत मेरी कुव्वते बाज़ू से हासिल नहीं हुई बलकि सिर्फ आपके फज़लो करम और अता व बख्शिश से हुई है।

اَللّٰھُمَّ لَکَ الْحَمْدُ کُلُّہٗ وَلَکَ الشَّکرُ کُلُّہٗ، اَللّٰھُمَّ لا اُحصِیْ ثَنَاءً عَلَیْکَ اَنْتَ کَمَا اَثْنَیْتَ عَلیٰ نَفْسِکَ.

परवर्दिगारे आलम! हमने एहराम की पूरी पाबंदी की और मक्का मुकर्रमा और हरमे मोहतरम की ताज़ीमो तकरीम में किसी क़िस्म की कमी नहीं की लेकिन कोई कुसूर हो गया हो तो उसे अपने लुत्फो करम से मुआफ फरमायें और दीगर अरकाने हज में भी आप मेरे अनीस हो जायें बिलखुसूस मदीना मुनव्वरा, मस्जिदे नबवी और रौज़ये अतहर मोहम्मद स०अ०व की ख़िदमते अक़्दस में और शैख़ाने हज़रत की ख़िदमत में सही तौर से ताज़ीमो तकरीम के साथ दरूदो सलाम पढ़ने की तौफीक़ अता फरमाइये, आमीन या रब्बुल आलमीन!! और अपने दयारे रहमत से हज्जे मबरूर नसीब फरमाइये और जिन लोगों ने दुआओं के लिए मुझसे कहा उनकी जाएज़ दिली मक़ासिद को पूरा फरमाइये अैर उनकी ख़ताओं को मुआफ फरमाइये, और उन सभी को हज्जे मबरूर और ज़्यारत का शर्फ नसीब फरमाइये, कुल मुसलमान मर्दो औरतों को सच्चा मुसलमान बनाइये और उनको आपस में मोहब्बत और इत्तेहाद व इत्तेफाक़ अता फरमाइये, जो मुसलमान मर्दो

औरत कुँवारे हैं उनको अच्छा जोड़ा अता फरमाइये और जो बेऔलाद हैं उनको औलादे सालेह कसीर अता फरमाइये ताकि रोज़े क़यामत उम्मते मोहम्मदिया स०अ०व ज़्यादा से ज़्यादा हो सके, हम में जो बीमार हों उनको शिफाये कुल्ली अता फरमाइये, मियाँ बीवी में मेल जोल अता फरमाइये, जो बेरोज़गार हैं उनको रोज़ी अता फरमाइये, बेगुनाहों को क़ैद से रिहाई नसीब फरमाइये, माँओं की गोदें भरी रखें, जो मुसीबत ज़दा हैं उनकी मुसीबतों को दूर फरमाइये, बेक़रारों को क़रार दें, इम्तहान देने वालों को आला दर्जे की कामयाबी अता फरमाइये, मुक़द्दमे वालों को कामयाबी अता फरमाइये और मकर वजहों को सुबकदोश अता फरमाइये।

سُبْحَانَ رَبِّکَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا یَصِفُوْنَ وَسَلامٌ عَلَی الْمُرْسَلِیْنَ وَالْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ.

यह आयते करीमा पढ़ते हुये अपने दोनों हाथों को मुँह पर फेर लें और खूब देर तक दुरूद शरीफ पढ़ते रहें इसके अलावा जिस दुआ में दिल लगे और क़ल्ब में रिक़्त पैदा हो उसको पढ़ें और तिलावते कलामे पाक, दरूद शरीफ और हिज़्बुल आज़म या मुनाजाते मक़्बूल जिसमें सब क़ुरआनी दुआयें और हदीसों की वो दुआयें जिनमें रसूल स०अ०व ने पनाह माँगी है और वह तमाम दुआयें जिनमें नेयमतें तल्ब की हैं और जिन में बेहतरीन कलेमात के साथ दरूद शरीफ भी मज़कूर हैं, अरफात का एक एक मिनट बहुत क़ीमती हैं, अरफात के यह चँद घंटे सारे हज का निचोड़ है इसको बर्बाद न करें।

दुआयें

अकसर फारिग़ औक़ात में दो रकअत नमाज़ नफल अदा करके ये क़ुरआनी दुआयें माँगा करें।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّکَ أَنتَ السَّمِیعُ الْعَلِیمُ. رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَیْنِ لَکَ وَمِن ذُرِّیَّتِنَا أُمَّةً

مُّسْلِمَةً لَّکَ وَأَرِنَا مَنَاسِکَنَا وَتُبْ عَلَیْنَا إِنَّکَ أَنتَ التَّوَّابُ الرَّحِیمُ.

rtqZek% ऐ हमारे परर्दिगार! हमको बना ले अपना फरमाबरदार और

औलाद में से भी एक जमाअत अपनी फरमाबरदार बना और बता हमको हमारी इबादत के तरीक़े और हम पर तवज्जो फरमा, बेशक तू ही तवज्जो फरमाने वाला बड़ा मेहरबान है।

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِى الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ.

तर्जुमा: ऐ हमारे परवर्दिगार हमको दुनया में भलाई और आख़िरत में भलाई दे और हमको बचा आग के अज़ाब से।

رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ.

तर्जुमा: ऐ हमारे रब तू हम पर सब्र डाल दे और हमारे क़दमों को जमाये रख और हमारी मदद फरमा, काफिर क़ौम पर।

سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ.

तर्जुमा: हमने सुना और इताअत की ऐ हमारे रब तुझसे हम मुआफी चाहते हैं और तेरी तरफ लौट कर जाना है।

رَبَّنَا لا تُؤَاخِذْنَا إِن نَّسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِيْنَ مِن قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ.

तर्जुमा: ऐ हमारे परवर्दिगार! ना पकड़ हमको अगर हम भूल जायें या चूक जायें, ऐ हमारे रब और ना रख हमारे ऊपर भारी बोझ जैसा कि तू ने रखा था उन लोगों पर जो हमसे पहले थे। ऐ हमारे परवर्दिगार! ना उठवा हमसे इतना बोझ जिसकी हमको ताक़त नहीं और हमसे दर गुज़र कर और हमको बख़्शिश दे और हम पर रहम फरमा, तू ही हमारा आक़ा है तू हमारी मदद फरमा काफिर क़ौम पर।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ. رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ.

तर्जुमा: ऐ हमारे परवर्दिगार हमारे दिलों को टेढ़ा मत कर, बाद इसके कि तू हमको हिदायत दे चुका है और अपनी जानिब से मेहरबानी अता फरमा। तहक़ीक़

की तू बहुत देने वाला है। ऐ हमारे परवर्दिगार तू सब लोगों को एक ऐसे दीन में जमा करेगा कि जिसमें कोई शक नहीं, यक़ीनन अल्लाह वादा ख़िलाफी नहीं करता।

رَبَّنَا إِنَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ.

तर्जुमाः *ऐ हमारे परवर्दिगार हम ईमान ले आये तू हमारे गुनाहों को मुआफ कर दे और आग के अज़ाब से बचा।*

رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ.

तर्जुमाः *ऐ हमारे परवर्दिगार! तू अता फरमा मुझको अपनी जानिब से नेक औलाद तू ही दुआ का सुनने वाला है।*

رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا أَنزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ.

तर्जुमाः *ऐ हमारे रब हमने मान लिया जो कुछ आपने नाज़िल फरमाया और रसूल की पैरवी की तू हमको लिख ले गवाहों के साथ।*

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ.

तर्जुमाः *ऐ हमारे रब हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारी ज़्यादती को जो हमारे कामों में हुई और हमारे क़दमों को जमाये रख और हमारी मदद फरमा काफिर क़ौम पर।*

فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنتَ وَلِيِّي فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ.

तर्जुमाः *ऐ पैदा करने वाले आसमानों और ज़मीनों के तू ही मेरा आक़ा है, दुनया और आख़िरत में तू मुझे मुसलमान हालत में मार और नेक लोगों के साथ मिला दे।*

(तालिबे दुआ)

ग़ज़ाला अख्तर शम्सी, तवेला स्ट्रीट मुरादाबाद

अरफात की शाम को पढ़ने की दुआ

हज्जतुल विदा के मौक़े पर हुज़ूर स०अ०व ने अरफात की शाम को कसरत के साथ जो दुआ पढ़ी है वह यह है:

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَالَّذِىْ تَقُوْلُ وَخَيْرًا مِّمَّا نَقُوْلُ، اَللّٰهُمَ لَكَ صَلاتِىْ وَنُسُكِىْ وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِىْ وَاِلَيْكَ مَابِىْ وَلَكَ رَبِّ تُرَاثِىْ، اَللّٰهُمَّ اِنِّى اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَوَسْوَسَةِ الصَّدْرِ وَشَتَاتِ الْاَمْرِ. (غنيه ٨٣)

"ऐ अल्लाह! हर तारीफ तेरे लिए ऐसा है जैसी तू ने की है और भलाई तेरे लिए है उन चीज़ों में से जो हक कहते हैं। ऐ अल्लाह! मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी व मनासिक और मेरी ज़िन्दगी और मौत तरे वास्ते है और तेरे ही पास मेरी पनाहगाह है और तेरे लिए है, ऐ मेरे रब! मेरा परागंदा होना, ऐ अल्लाह! मैं क़ब्र के अज़ाब से पनाह माँगता हूँ और दिल में आने वाले वस्वसों से पनाह चाहता हूँ और काम के इंतेशार और परागंदगी की परेशानी से पनाह माँगता हूँ।"

अरफात में दुआ मांगने के लिए जितनी दुआयें मंकूल हैं वो बहुत कसीर तादाद में हैं। और बहुत लम्बी लम्बी दुआयें हैं, उनमें से छाँट छाँट कर चार दुआयें हमने यहाँ लिखी हैं और यह दुआयें मुख्तसर भी हैं और जामे भी। इन दुआओं के साथ दुआ करने में इंशाअल्लाह बहुत जल्द कुबूलियत हो जायेगी।

अरफात से वापसी

मैदाने अरफात में जब सूरज गूरूब हो जाये तो तोप की आवाज़ आयेगी, इससे पहले किसी को हुदूदे अरफात से निकलने नहीं दिया जाता। आप इस वक़्त अपनी क़्यामगाह में दुआ में मश्गूल रहें। लोग पहले से आकर रास्ते में भीड़ लगाते हैं। आप इससे बचे रहें और यह बात भी याद रखें कि अरफात से अमीरुल हज के निकलने से पहले निकलना जायज़ नहीं है और जब तोप की आवाज़ आती है तो वह अमीरुल हज के निकलने के बाद ही आती है।

इसके साथ यह दुआ पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ اَفَضْتُ وَمِنْ عَذَابِكَ اَشَفْتُ وَاِلَيْكَ رَغِبْتُ وَمِنْ سَخَطِكَ رَهِبْتُ فَاقْبَلْ نُسُكِىْ وَاَعْظِمْ اَجْرِىْ وَتَقَبَّلْ تَوْبَتِىْ وَارْحَمْ تَضَرُّعِىْ، وَاسْتَجِبْ دُعَائِىْ وَاعْطِنِىْ سُؤْلِىْ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

ऐ अल्लाह! मैं तेरे दरबार में हाज़िर होता हूँ और तेरी तरफ चलता हूँ और तेरे अज़ाब से खौफज़दा हूँ और तेरी तरफ रूजू करता हूँ और तेरे ग़ज़ब से डरता हूँ। ऐ अल्लाह! तू मेरे मनासिके हज को कुबूल फरमा और अज़ीम तरीन सवाब अता फरमा और मेरी तौबा कुबूल फरमा गिरया व ज़ारी पर रहम फरमा और मेरी दुआ कुबूल फरमा, और मेरी मुराद और तलब पूरी फरमा, ऐ अरहमुर राहेमीन!

अपनी आखरी इल्तिजा रब्बुल आलमीन के हुज़ूर में पेश करके मैदाने अरफात से आसमान तक इस नूरानी माहोल और तजल्लियात की इस फिज़ा पर एक हसरत भरी नज़र डालते जाइये और '' लब्बैक '' की सदाओं में अल्लाह को याद करते हुये अपनी ज़ात को, अपने वजूद को भूल जाइये, शैतान किसी न किसी तरकीबो तदबीर से आपकी दिलजमई, सुकूने ख़ातिर व हुज़ूरे क़ल्ब और ज़िक्रे इलाही में रखना अन्दाज़ी की कोशिश करेगा, इस ख़तरे को "لاحول ولا قوة الا بالله" *बार बार पढ़ कर दूर कीजिये।*

मुज़दल्फा

अरफात के मुज़दल्फा के लिए वापसी में रास्ते में दुआ कसरत से पढ़ते रहें। और मुज़दल्फा के रास्ते में कहीं भी मग़्रिब की नमाज़ ना पढ़ें। कुछ लोग नावाक़फियत से यह समझकर पढ़ लेते हैं कि मग़्रिब का वक़्त ख़त्म होता जा रहा है, यह ग़लत कर रहे हैं। तुलू फज्र से एक घण्टा पहले भी मुज़दल्फा पहुँचने की उम्मीद हो तो भी रास्ते में मग़्रिब पढ़ना जायज़ नहीं है। इस दिन हुज्जाजे कराम के लिए मग़्रिब का वक़्त मुज़दल्फा पहुँचने के बाद ही होता है। हाँ अल्बत्ता इत्तेफाक़ से फज्र तुलू होने का खतरा हो तो अब पढ़ सकते हैं।

मुज़दल्फा की दुआ

नवीं और दस्वें ज़िलहिज्जा की दर्मियानी रात मुज़दल्फा की रात है। इस रात की फज़ीलत शबे क़द्र से कम नहीं है। तमाम रात जागते रहना, नमाज़, तिलावत और

दुआ में मसरूफ रहना बड़ी खुश क़िस्मती है। और मुज़दल्फा की रात में यह दुआ भी कसरत के साथ पढ़ते रहें:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَسۡئَلُكَ اَنۡ تُرۡزِقَنِىۡ فِىۡ هٰذَا الۡمَكَانِ جَوَامِعَ الۡخَيۡرِ كُلِّهٖ وَاَنۡ تَصۡرِفَ عَنِّى السُّوۡءَ كُلِّهٖ فَاِنَّهٗ لاَ يَفۡعَلُ ذٰلِكَ غَيۡرُكَ وَلاَ يَجُوۡدُ بِهٖ اِلَّا اَنۡتَ. (هكذا زيلعى اختصارا ٢/٢٧)

“ ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझसे इस बात का सवाल करता हूँ कि मुझको इस मुक़द्दस मुक़ाम में तमाम नेकियों और भलाइयों का मजमुआ अता फरमा। और मुझसे हर क़िस्म की बुराईयों को दूर फरमा। बेशक तेरे अलावा ये काम कोई नहीं कर सकता और ना तेरे सिवा कोई दूसरा इस भलाई की बख्शिश कर सकता है। ”

uksV% मुज़दल्फा में रात गुज़ारने के बाद फज्र की नमाज़ अव्वल वक़्त में पढ़ कर वकूफ शुरू कर दें और इसमें अल्लाह तआला से दुआयें माँगते और ग्रियाओ ज़ारी करते रहें। और सूरज तुलू होने से ज़रा पहले मिना को रवाना हो

मुज़दल्फा में वकूफ की दुआ

जब मुज़दल्फा में फज्र की नमाज़ के बाद तुलूये शम्स से पहले वकूफ किया जाये तो दौराने वकूफ ये दुआ पढ़ना बहुत बड़े अज्र का बाईस है।

اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ الۡمَشۡعَرِ الۡحَرَامِ وَالۡبَيۡتِ الۡحَرَامِ وَالشَّهۡرِ الۡحَرَامِ وَالرُّكۡنِ وَالۡمَقَامِ بَلِّغۡ رُوۡحَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ مِنَّا التَّحِيَّةَ وَالسَّلاَمَ وَاَدۡخِلۡنَا دَارَ السَّلاَمِ يَا ذَا الۡجَلاَلِ وَالۡاِكۡرَامِ. (مفهوم قاضيخان ١/٣١٨، هكذا زيلعى اختصاراً ٢/٢٧)

“ ऐ अल्लाह! मश्अरे हराम के तुफैल से और तेरे बैतुल हराम के तुफैल से हुरमत वाले महीनों के तुफैल से और रुक्ने असवद और मुक़ामे इब्राहीम अलै० के तुफैल से हज़रत मोहम्मद स०अ०व की रूह को हमारी तरफ के दुरूदो सलाम का तोहफा पहुँचा दे और हमको सलामती के घर में दाख़िल फरमा। यानि जन्नत का आला मुक़ाम हमको अता फरमा, ऐ अज़मत वाले और करम वाले, हमारी मुरादें पूरी फरमा। ”

हज का तीसरा दिन (दसवीं ज़िलहिज्जा)

आज दसवीं ज़िलहिज्जा यौमुल नहर है। आज बहुत सारे काम करने हैं। आज मनासिके हज से चार वाजिबात और एक फर्ज़ कुल पाँच उमूर अदा करने हैं।

मुज़दल्फा से रवांगी

मुज़दल्फा में फज्र की नमाज़ के बाद वकूफ करना, उसमें अल्लाह तआला से खूब ग्रियाओ ज़ारी करके रोयें और मुरादें माँगे और सूरज तुलू होने से ज़रा पहले मिना के लिए रवाना हो जायें और याद रखें कि मुज़दल्फा से 70 कंकरियाँ लें। और वह इसलिये लेना है कि अगर तेरहवीं को भी मिना में ठहरना पड़ जाये तो इस दिन भी तीनों जमरात के सात सात कंकरियों से रमी कर सकें।

बतने मुहस्सर से गुज़रने की दुआ

जब मुज़दल्फा से मिना के लिए रवाना हो जायें तो रास्ते में वादीये मुहस्सर पड़ेगी। यह मिना और मुज़दल्फा के दर्मियान कुछ नशेबी इलाक़ा है। यहाँ असहाबे फील पर अज़ाब नाज़िल हुआ था। यहाँ से इस्तग्फार पढ़ते हुये और ये दुआ पढ़ते हुये गुज़रना चाहिये:

اَللّٰهُمَّ لا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِکَ وَلا تُهْلِكْنَا بِعَذَابِکَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذٰلِکَ. (کتاب المناسك ۲۶، مسنون ومقبول دعائیں ۱۳۲)

“ ऐ अल्लाह! हमको अपने ग़ज़ब के ज़रये से हलाक न फरमा और ना अपने अज़ाब के ज़रये हलाक फरमा। और इससे पहले हमको मुआफ फरमा। ”

मिना में आकर सबसे पहले जुमराये उक़बा की रमी करना है। और दसवीं ज़िलहिज्जा को जुमराये उक़बा की रमी का वक़्त सूरज तुलू होने के बाद से ज़वाल तक अफज़ल है और ज़वाल के बाद भी जायज़ है। मगर सूरज डूबने के बाद मकरूह है।

कुर्बानीः *अगर हज्जे तमत्तो या हज्जे क़िरान है तो रमी के बाद एक कुर्बानी करना वाजिब है। कुर्बानी का पैसा बैंक को दे कर बैंक को कुर्बानी का वकील ना बनायें। इसमें बड़ा घपला होता है। कई बार हनफी मसलक के हाजी की तर्तीब बदल जाने की वजह से दम (कुर्बानी) वाजिब हो जाता है इसलिये खुद करे या किसी ख़ास आदमी को वक़्त मुतअय्यन करके ज़िम्मेदार बनायें।*

सर मुंडानाः *अगर तमत्तो या क़िरान है तो कुर्बानी के बाद सर के बाल उतार दें। और अगर तमत्तो या क़िरान नहीं है तो रमी के बाद बिला कुर्बानी के बाल उतार दें। अब सिला हुआ कपड़ा पहन सकते हैं। मगर बीवी से मोहब्बत नहीं कर सकते। हाँ अल्बत्ता तवाफे ज़्यारत के बाद सोहबत जायज़ है।*

तवाफे ज़्यारतः *सर के बाल उतारने के बाद अगर मौक़ा हो तो इसी दिन मस्जिदे हराम में आ कर तवाफे ज़्यारत करें और तवाफे ज़्यारत हज का एहम तरीन रुक्न है। और अगर दसवीं ज़िलहिज्जा को गुंजाइश न हो तो ग्यारहवीं ज़िलहिज्जा या बारहवीं ज़िलहिज्जा को भी तवाफ कर सकते हैं। मगर बारहवीं ज़िलहिज्जा को सूरज डूबने से पहले तवाफ कर लेना वाजिब है। लिहाज़ा अगर मज़ीद ताख़ीर होगी तो जुरमाने में दम (कुर्बानी) लाज़िम है और तवाफ के दौरान पढ़ने की दुआयें इसी किताब में मौजूद है, वहाँ से देख लें।*

और दसवीं और ग्यारहवीं के दर्मियानी रात और ग्यारहवीं और बारहवीं की दर्मियानी रात मिना में आ कर गुज़ारना मसनून है। अल्बत्ता अगर दसवीं को तवाफे ज़्यारत करके लौटने में रास्ते में पूरी रात या अक्सर हिस्सा भीड़ में गुज़र जाये तो कोई गुनाह नहीं और मिना में रात गुज़ारना वाजिब नहीं, बल्कि सुन्नत है और उसके छूट जाने से जुर्माना लाज़िम नहीं होता।

मिना पहुँचने के बाद पढ़ने की दुआ

जब मुज़दल्फा से मिना को पहुँच जायें तो जमरात तक पहुँचने से पहले बार बार तलबिया पढ़ते रहें और तकबीरो तहलील और इस्त्ग़फार भी करते रहें और

ये दुआ पढ़ें:

اَللّٰھُمَّ ھٰذِہٖ مِنًی قَدْ اَتَیْتُھَا وَاَنَا عَبْدُکَ وَابْنُ عَبْدِکَ اَسْئَلُکَ اَنْ تَمُنَّ عَلَیَّ بِمَا مَنَنْتَ بِہٖ عَلٰی اَوْلِیَائِکَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ. (کتاب الحج ۱۳۷، بالمعنی قاضیخان ۱/۳۱۷)

" ऐ अल्लाह! यह मुक़ामे मिना है जिसमें हाज़िर हुआ हूँ। और मैं तेरा बन्दा हूँ, और तेरा आजिज़ बन्दा हूँ, मैं तुझसे इस बात का सवाल करता हूँ कि तू मेरे ऊपर ऐसा एहसान फरमा जैसा कि तू ने अपने औलिया और नेक बन्दों पर फरमाया है। ऐ सबसे बढ़ कर रहम करने वाले। "

जमरात पर कंकरियाँ मारते वक़्त तलबिया ख़त्म करना

यौमुल नहर में जमराये उक़बा की रमी करते वक़्त पहली कंकरी के साथ तलबिया ख़त्म कर दें, अब तलबिया का सिलसिला ख़त्म हो गया और हर कंकरी के साथ ये दुआ पढ़ते जायें।

بِسْمِ اللّٰہِ، اَللّٰہُ اَکْبَرُ رَغْمًا لِلشَّیْطٰنِ وَرِضًی لِلرَّحْمٰنِ. (معلم الحجاج ۱۷۸)

" मैं अल्लाह के नाम से शैतान को कंकरी मारता हूँ, अल्लाह बहुत बड़ा है, ये कंकरियाँ शैतान का मुंह काला करने और अल्लाह को राज़ी करने के लिए मारता हूँ। "

इस तरह तीनों दिन की रमी में हर कंकरी के साथ यह दुआ पढ़ते रहें।

जमरात की रमी के बाद की दुआ

हर जमरा की रमी के बाद दुआ मांगना बहुत मक़्बूल है जिन मुक़ामात में दुआयें कुबूल होती हैं। उनमें से एक यह भी है कि जमरात की रमी के बाद हाथ उठाकर दुआ मांगी जाये और यह दुआ भी पढ़ी जाये:

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْہُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَذَنْبًا مَغْفُوْرًا وَسَعْیًا مَشْکُوْرًا. (قاضی خان علی الھندیہ ۱/۳۱۸، ھکذا زیلعی ۲/۳۰)

" ऐ अल्लाह! इसको मेरे लिए हज्जे मबरूर बना दे और मेरे गुनाह मुआफ फरमा। और मेरी कोशिश को कुबूल फरमा। "

कुर्बानी की दुआ

पहले दिन बड़े शैतान को कंकरी मारने के बाद यानि रमिये जिमार में खुदा के हुक्म की तामील के बाद कुर्बान गाह पहुंच जायें और कुर्बानी करने के लिए सिर्फ़: بسم الله الله اكبر कहना काफी है, लेकिन अगर किसी को याद हो तो जानवर को लिटाते वक़्त यह दुआ पढ़े:

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِکِیْنَ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُکِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ، لَا شَرِیْکَ لَهٗ وَبِذٰلِکَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِیْنَ. (قاضی خاں علی الهندیه ۳۱۹/۱، مشکوۃ ۱۲۸/۱)

“ बेशक मैं अपने आपको उस ज़ात के लिए हर चीज़ से यक्सू हो कर मुतवज्जो होता हूँ जिसने आसमान व ज़मीन को पैदा किया। और मैं मुश्रेकीन में से नहीं हूँ। बेशक मेरी नमाज़ मेरी कुर्बानी मेरा जीना और मेरा मरना सब कुछ अल्लह रब्बुल आलमीन के लिए है। उसका कोई हमसर नहीं है और उसी का हमको हुक्म दिया गया है और मैं सरापा फरमाबरदारों में से हूँ। ”

हल्क़ की दुआ

कुर्बानी से फारिग़ होने के बाद सर मुंडा कर एहराम खोल देना है और सर मुंडाते वक़्त यह दुआ पढें:

اَللّٰهُمَّ بَارِکْ فِیْ نَفْسِیْ وَاغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَاجْعَلْ لِیْ بِکُلِّ شَعْرَةٍ مِّنْهَا نُوْرًا یَوْمَ الْقِیَامَةِ. (قاضی خاں ۳۱۹/۱)

“ ऐ अल्लाह! मेरे अन्दर बरकत अता फरमा और मेरे गुनाह माफ फरमा और सर के इन बालों में से हर बाल के बदले मेरे लिए क़यामत के दिन एक एक नूर पैदा फरमा। ”

हज का चौथा दिन (ग्यारहवीं ज़िलहिज्जा)

आज की ज़िम्मेदारी ज़्यादा नहीं। अगर दसवीं को तवाफे ज़्यारत भी कर लिया था तो आज सिर्फ तरतीबवार तीनों जमरात की रमी करना है और अगर तवाफे ज़्यारत नहीं किया था तो आज जा कर कर लें। और ज़वाल के बाद तीनों जमरात की रमी करना है और आज की रमी ज़वाल से पहले जायज़ नहीं है अगर कोई करेगा तो ज़वाल के बाद दोबारा करना होगा। और सूरज डूबने से पहले पहले कर लेना चाहिये। हाँ अल्बत्ता अगर भीड़ भाड़ की वजह से जमरात तक पहुंचना बहुत मुश्किल है तो सूरज डूबने के बाद भी बिला कराहत जायज़ है। लेकिन बिना सूरज डूबने तक ताखीर करना मकरूह है, मगर कोई जुर्माना लाज़िम न होगा। हाँ अगर दूसरे दिन की सुबह सादिक़ तक ताख़ीर हो जाये तो जुर्माने में दम (कुर्बानी) लाज़िम हो जायेगा।

हज का पाँचवा दिन (बारहवीं ज़िलहिज्जा)

आज सिर्फ एक काम करना है यानि ज़वाल के बाद तरतीबवार तीनों जमरात की रमी करना है। आज भी ज़वाल से पहले रमी जायज़ नहीं है और अगर आज ही मक्कतुल मुकर्रमा रवाना हो जाना है तो सूरज डूबने से पहले हुदूदे हरम से बाहर ना निकल सके तो फिर रात भी मिना ही में गुज़ारना लाज़िम हो जायेगा। और तेरहवीं तारीख के ज़वाल के बाद तीनों जमरात की रमी करके ही वापस हो सकते हैं। और तेरहवीं के गुरूब से पहले ही रमी लाज़िम है और अगर गुरूब हो जायेगा तो दम (कुर्बानी) देने के अलावा कोई और हीला नहीं है। इसलिये अगर बारहवीं को वापिस होना है तो इस बात का ख़्याल रखना ज़रूरी है कि हुदूदे मिना में सूरज गुरूब न हो और हुदूदे मिना जमरये उक़बा के बाद ख़त्म हो जाती है।

अल्हम्दु लिल्लाह! हज के तमाम अरकान पूरे हो गये। अब हाजी के ऊपर कोई काम बाक़ी नहीं रहा। अब घर वापिस होते वक़्त आफाक़ी हाजी के ऊपर सिर्फ तवाफे विदा व रुख्सती वाजिब है। मक्के के रहने वालों पर तवाफ वाजिब नहीं है।

रमिये जिमार व कुर्बानी

मुज़दल्फा से दसवीं तारीख को मिना पहुंच कर सुन्नते इब्राहीमी की पैरवी और सुन्नत व इर्शादे नबवी स०अ०व की तामील में जमरये उक़बा (बड़े शैतान) को पहले कंकरी के साथ: بسم الله الله اكبر (अल्लाह का नाम ले कर, वो अल्लाह जो सबसे बड़ा है) पढ़ कर अपने शैतान को मारये और रमीये जिमार के बाद यह दुआ पढ़े: اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَسَعْيًا مَشْكُوْرًا وَذَنْباً مَغْفُوْراً.

दूसरे और तीसरे दिन जमरा ऊला व जमरा वुस्ता की रमी के बाद क़िबलारू खड़े हो कर देर तक दुआ कीजिये।

कुर्बानी से पहले या बाद में ये दुआ पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْهُ مِنِّیْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ حَبِيْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّخَلِيْلِکَ اِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ، وَاجْعَلْهُ قُرْبَانًا بِوَجْهِکَ الْكَرِيْمِ وَعَظِّمْ اَجْرِیْ عَلَيْهِ.

कुर्बानी करते वक़्त जुबान से नियत और दुआ पढ़ना ज़रूरी नहीं, अगर दिल में ख़्याल कर लिया कि मैं कुर्बानी करता हूँ और जुबान से कुछ नहीं पढ़ा, सिर्फ कह कर ज़िबह कर दिया तो कुर्बानी दुरुस्त हो गई। जिनको कुर्बानी की दुआ याद हो या ना पढ़ सकते हों तो सिर्फ: بسم الله الله اكبر पढ़ लेना काफी है।

अपने लिए हिदायत व इस्लाह के ख़्याल से यह समझये कि '' शैतान '' आपके अन्दर छिपा हुआ एक दुश्मने दीनो ईमान है और यह कंकरियाँ अन्दरूनी जुलमत व तारीकी है जिससे आप अपने बातिन को पाको साफ करने और आइन्दा के लिए '' शैतान '' की गिरफ्त और उसके पंजे से छूटने की तीन रोज़ तक कोशिश कर रहे हैं।

بسم الله الله اكبر पढ़ कर इस जानवर की शक्ल में रब्बुल आलमीन के हुजूर में अपनी जान की कुर्बानी पेश कीजिये। आपके हलाल किये हुये जानवर का गोश्त इसकी खाल और खून की अल्लाह तआला को ज़रूरत नहीं, वह सिर्फ आपसे बातिन की सफाई और अल्लाह के लिए हर चीज़ कुर्बान करने का यह जज़्बा और यह ईमानी तोहफा कुबूल करेगा।

अय्यामे तशरीक़

ईद के बाद यह तीन दिन 11, 12, 13 अय्यामे तशरीक़ कहलाते हैं। दसवीं ज़िलहिज्जा से बारहवीं तारीख के गुरूबे आफताब से पहले तक कुर्बानी का वक़्त है। कुर्बानी के गोश्त को धूप में सुखाने को अरबी में '' तशरीक़ '' कहते हैं। कुर्बानी का यह गोश्त जिस पर नमक वगैरह लगा कर सुखाया जाता है। तबर्रुकन साल भर तक इस्तेमाल के क़ाबिल होता है। यह तीन दिन खाने पीने और खासतौर पर गोश्त जैसी नेयमत की कसरत व फरावानी के होते हैं। इसलिये अय्यामे तशरीक़ के मुतअल्लिक़ अल्लाह तआला ने फरमाया है कि यह चन्द दिन हैं जिनमें अपने खुदा को याद करते हो।

ज़िक्र व शुक्र के साथ उसकी दी हुई नेयमतों के खाने पीने में ग़रीबों और मिस्कीनों को भी शरीक कीजिये। इर्शादे नबवी स०अ०व के मुताबिक़ ईदुल फित्र, ईदुल अज़हा और अय्यामे तशरीक़ में रोज़ा रखने की मुमानिअत आई है।

अय्यामे तशरीक में हर फर्ज़ नमाज़ के बाद और हर हर वक़्त इन तकबीरात का एहतमाम रखिय।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْراً، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا،
وَسُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا، وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا.

रब्बुल आलमीन ने आपको अपने दरबार में हाज़री के बाद जो अज़ीमुश्शान इज़्ज़त और नेक नामी अता की है तमाम उम्र आप उसका हक़ अदा नहीं कर सकते, इसकी क़द्रो क़ीमत को समझये। हरमैन शरीफैन की ज़्यारत और इस चन्द रोज़ बहारे ज़िन्दगी के मुबारक लम्हात और इन मुक़ामाते मुक़द्देसा के शबो रोज़ को जिन्दगी के हर नशेबो फराज़ में याद रखिये, यह याद काम आने वाली चीज़ है।

मुझ गुनाहगार पे ये बारिशे करम
मुंह देखता हूँ रहमते आजिज़ नवाज़ का

दुआओं में याद रखें: